

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

श्रीगणशायनमः रामःस्वलाद्तरावनीर्णः सम्दृ छ्लं च्याप्रक्रियः स्यानुप्ताध्वलस्य दूतंस्र द्रन्तरम्याद्दश्य १ रामः । भोन्हावीरं । १० व्यक्तानाद्यविद्यस्य स्याद्दश्य राद्धाः स्तान्य प्रतिम्न्यतः। । १० व्यक्तानाद्यविद्यस्य स्याद्दश्य राद्धाः स्तान्य प्रतिम्न्यतः। । १० व्यक्तानाद्यस्य स्व द्र्ये ना विद्यस्य प्रतिम्न्याः स्व त्राप्तदः स्व त्राप्तदः स्व त्राप्तदः स्व त्राप्तदः स्याप्तदः स्यापतः स्याप्तदः स्यापतः स्यापत

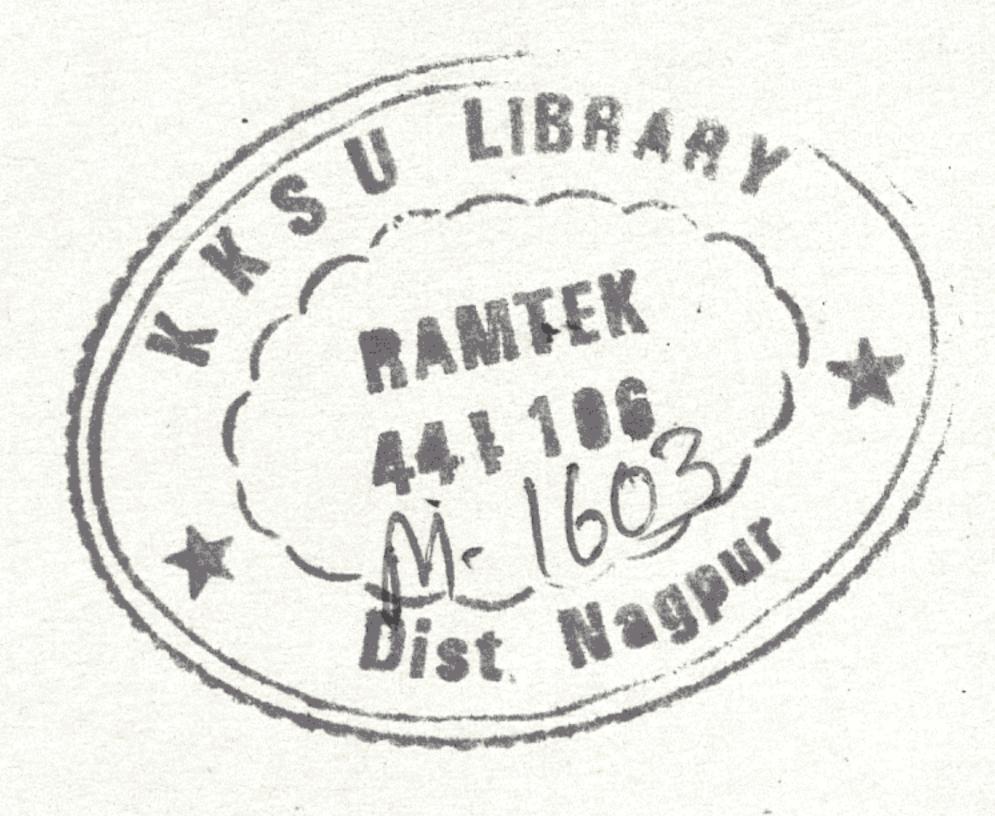
Mcc. NO. 4464 M-1603

Title - द्वनाद्गु॰ (सहामाटके अष्टमः अद्भः)

Mythor - 3

Date - 3

54 bject - 6/1295, folio - 6, Xerox - 12



अवाश्य ह्यं बध्यारावणसभायां ग्रांतारा नम् चे गरे राह्याः क्ययन क्षसरावणार्थ्यार ने रवी हु क्रियारपह्त्य न स्टान्य ने क्रांच्या र खाकर क्रियायग्य रित्र मिंदिता प्रति म्हांच्या र्या स्प्रति स्ति प्रति स्वांच्या क्रियायग्य रित्र प्रति स्ति प्रति स्ति मिंदित स्वांच्या क्रियायग्य प्रति क्रियायग्य क्रय

रिगर्गरित सम्बन्धित सम्बन्धित । एउपा निर्मा सम्बन्धित । सम्बन्धित । सम्बन्धित । सम्बन्धित । सम्बन्धित । सम्बन्ध लक्षाः । त्राक्षाः स्वाद्याः स्वाद्याः सार्वद्याः सार्वद्याः सार्वद्याः सार्वद्याः सार्वद्याः सार्वद्याः सार्वद क्षावकपृथ्वक्रामम्भःक्षिण्यस्वन्यप्तःस्त्रोवनपतिःकःसार्थ असेन दाषानः सप्तरित धर्मिन भावेना विकाशिका विकाश कार्मिन । वर समन्वितरचषेतीरश्वकर्यासाना-कान्यादनण्यक्ष्याः अमरणानी ना निमान पद अवश्यामाक्ष कर ते प्रतीप शिनाम के को सामा जिला मानी सामी

साप्यक्षेन्वास्ति। स्थानिक्षेवित्रण्यास्य स्थित्वापित्वापित्वापित्रस्ति। स्थान्य स्था

यसंदेशहरेणमार्तस्नेनानाध्वाशंनिधिः स्ववंगीः परवन्तिजालयइवपावे शिलेकापुरेणस्नानाद्शिसम्भयभाष्वचनं चामंजिर्शः प्रतः सेन्यं भर्षविध ध्यशहचष्रश्मः सथंक्षयाने गर्थगरायणः सक्रीधगक्रतो हैनार्ण्यक्रने करण मानंत्रणनारं क्षतीरहणहरूष दुवननिष्णोगितिनहनः गक्षतीवन्दिन्दालानिष् अश्रसंधान सह हरह हं मुद्रोचो भी गगना निति हें द्रावज भी गर्पाञ्चन हर सम दंगसं धो बा विग्रहे वा विमिध्द्र ते दशानना अस्तो वा स्ता वा विश्वित वी हे स्त्रिह ध्यित्राष्ट्रान्स्रविहिमारावणराम्ह्त्वाणाध्याय्वर्द्रषणानागम्न्यान्षानी रे.५ इवर्गणितामः पास्पंतिनेबंडच्यासंधः गर्णगरावण अतिधर्षणामर्चेम् रिर् तः रेरेबानराधमका इप्रसाधिन्। मस्यः पादानमस्य स्तपितिहनकरोमंदमंद्रममा ग्रेख्डको ने लोक पाला मम म य चित्नाः पादरेश व बेंडः ॥ र क्या ने बेंद्र हा स्ववति स्रवध्यन्नगीनाचगर्भनिसङ्गोतापसोक्षेकथित्रभवतोवानग्नेस्विधा १ ला स्त्रंगरास्तर्भणाविः स्त्रम्भोधः से प्रमानः णाणितसे नम् तस्त्रं ताउधिः सं

वलमधनस्यागरेहसुवलस्यामास्यामह्तीवस्त जडमत्जानकां वार्यस्य प्रवणः विष्याण स्थानि व्यवने निहतः पिताण निर्मानी विर्वेदित्त स्वतः स्वयः स्वयः

रेरेशवणशवणाः कितवहूनेनान्वयंशुश्रमः प्रागेकं किल कार्तिवीर्धन्यने हे हें विश्व ते गर्म के ने ने ने शिवान ने किल के हे से इहा सी जिने र ने विश्व मित्र पामहित्र विश्व के ने ने ने श्वी मित्र विश्व के ने ने श्वी मित्र विश्व के ने मित्र विश्व के ने मित्र के मि

हैमास्तरे से श्वरान् रोष स्पाण्य वाहरण वार्ष सागर् स्यागर्ग स्यागर्ग स्यागरा स्वागरा स्वागरा है साय स्वागरा है सार है से राम स्वार्प हैं प्रति प्रवान हैं है सार है से राम स्वार्प प्रति प्रवान से राम से राम से सार से सार में साम से साम साम से साम

रंगडस्त्रम्मग्याक्षेयो जा चनःसारोपं प्रमेश्वःतं सं कुरिंभिःश्यालां तरे वारितः १६०१ न्याने प्रविद्यम् प्रति विद्यम् प्रति विद्यम् विद्यम् प्रति विद्यम् प्रति विद्यम् प्रति विद्यम् वि

स्मास्वर्। वाण्येवनु ताटकार्यस्य सर्प्तस्तानः स्वस्नि प्रिकाप्राण्यामपरः वर्विश् रसाह्वाशिरं स्याहितः मारि विविधाप च युनस्ता वस्य वारं निर्धि मो तुं रुव णमामि वस् १ पते मोरि पतो में यिक्षे ।। पर्यारे र्वाहिते यो अभिष्र में व्यक्ति युव स्ता मुनिस्त हार् बेवन मिक्कन्तर स्वाह निर्मा ये जी जी तकः । शो र्थि शे प्रियो ने पर्या प्रति में ग्रीसो पिनासी । अवेन स्वति विस्था विनि स्वाहे ने अपे रुवस्य परना प्राण्य स्वति ।। अने वस्त्यादे विस्ताने यिक्षे विस्था विने स्वाहे स्वाह्य प्रति ।। स्वाह्य स्वति ।। स्वाप्य सिर्व निर्मा से यिक्षे विस्ते स्वाह्य ने विने स्वाह्य ने विद्या स्वाह्य स्वा



,CREATED=23.09.20 14:49 TRANSFERRED=2020/09/23 at 14:51:35 ,PAGES=12 ,TYPE=STD ,NAME=S0003673 Book Name=M-1603-DUTANAD ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF ,FILE12=0000012.TIF

[OrderDescription]